



ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
यत्किंचिदपि कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ पाठ्यं स्यात् ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
उक्तं नमो भगवते वासुदेवा ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
विष्णुयुक्ताय नमो भगवते वासुदेवा ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
उक्तं नमो भगवते वासुदेवा ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
नमो भगवते वासुदेवा ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
वलिपूजने ॥ उक्तं नमो भगवते वासुदेवा ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
महोत्सवे ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
जातिवृद्धौ ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥
तय नमो भगवते वासुदेवा ॥ अथ कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥

२४

नमो

नाथश्चंदनयजनमसि ॥ धृतासर्न ॥ उं ह्राव्यग ॥ वृथानिषाय ॥ उं लंजविहति
 ॥ गिन्नगीकुवुवर्न ॥ ॥ उं प्रकनमनसावयंदवस्यसविपुः ॥ सवस्वधूमयस
 ॥ वागाव्यग्रीपूजन ॥ ॥ उं हिरव्यवर्धुर्ह्रिनिस्वर्धुर्जगत्सु ॥ श्रीवर्धुर्हिरसयी
 लक्ष्मीजागवदाममावहा ॥ गाजावहजागवदालंक्ष्मीमनसंगमिनी ॥ लक्ष्मीमावाक्य
 वन ॥ ॥ उं लंजवृग्निविहसत्यर्गिनप्रभुकाश्वासवर्ग ॥ सत्वन्निधिगुवजहस्त
 धृत्तुयामरुक्तवर्नि ॥ अहव ॥ कापुष्टुहर्ग ॥ ॥ यजमानरुक्तनकाष्ट्रदाययः

मन्त्र ३

सत्ताकायनमः ॥ १ ॥

शावाभ्रगनाधवातुजलनाथश्च ॥ गायत्राजय ॥ ॥ उं ० ० ० न्वेनाम्ना
 सग ० ० हिमाद्रिर्मग ० ० सनिधामहि ० ० वयस्कन्तावयस्कृत ० ० सहस्रकः ० ०
 गी ॥ ज्ञानसमत्तदरनमद्वोसोज्जास्यविगावमृखस्तितवात्रमहीय ॥ का
 निषाय ॥ ॥ १४ लाकादिसकययर्क ॥ उं ह्रियान्ताकर्ग ॥ ॥ उं ह्रियान्ता
 कायनमः ॥ उं वताकायनमः ॥ उं मरुताकायनमः ॥ उं जनताकायनमः ॥ उं
 तथेताकायनमः ॥ उं सत्यताकायनमः ॥ उं हताकादिसकययर्क ॥ उं मृतवस्तु

ॐ

जुतावृधमृउल्लाहसुमतावृधशायुतहृतामधृहृताविनाजानामकामधू
 अदीयमानाशकाशकृयुजा॥ॐ अग्निमूर्द्धादिवंककृतयनिष्ठयिवाश्रयीश्र
 यास्तनाहंसिजननि॥ अग्निमूर्द्धादिवंककृतयनिष्ठयिवाश्रयीश्र
 नीवेष्टुवीमिदमहर्कवत्तगमूर्त्तिनामियमभनिश्रयिजमाथानिचघालदमहर्कवत्त
 गमूर्त्तिनामियमभसमानायमसमानानिचघालदमहर्कवत्तगमूर्त्तिनामियमभसव

सर्वसवम्

श्रुतिवघालदमहर्कवत्तगमूर्त्तिनामियमभसजानायमसजाना
 कृत्यीकिनामि॥ अग्निनिर्ममृनी॥ॐ अश्ववाचदधिवकायथमादेव्याहिसकाश्रुहीष्टम
 वीजमृयसर्वीष्टजागुधन्वाधनार्वायवासवावतियूजन॥ अवतितकननकेयादिनि
 तयि॥ दृतधृ॥ॐ कयादमहर्कवत्तगमूर्त्तिनामियमभसजानायमसजाना
 श्रीगङ्गात्रिपुवाह॥ अग्निमूर्द्धादिवंककृतयनिष्ठयिवाश्रयीश्र
 न३ ५३

स्वाह्वी वरु उय जानी ॥ उय स्य हनि ॥ अरु क्षण ॥ अरु गत ॥ कवचना वरु नून
 ॥ उं वैष्णव नार, विष्णु रू अत न्ना श्रिता य धाम हि। त न्ना व क्रिय वा द या ॥ गायत्री न्ना
 म न ॥ धन मदी मृति कृत्वा ॥ उं अग्नि मृषिय व मान ४ या अरु न्यं यूना हि तद न मी मरु
 मरु न यी ॥ अग्नि न्यास ॥ र न जा थ न वि द व जा नि न के कृत्वा न स र यी ॥ स्वात्मानं विष्णु
 मय मूर्ति ध्यात्वा ॥ था न्यास क्री वि सि न्ना थ ॥ त न्ना अग्नि गृहीत्वा ॥ उं अरु अग्नि रू मा

मयमदधेनृहानियथभाजानेवदाश्रुनसूयस्ययूगलनमिननूयावायुथिवाः
 श्रातर्गथा॥ श्रियदिदक्षिकृत्वा॥ अजमानस्यसथाकोयमयदधश्रुमिस्त्वावनस
 मूद्रकामु॥ ॐ मयीगृह्णाम्यश्रुमि० वायस्यावायसूयआस्वायसूविश्याय
 मामूदवनासचक्रा० स्वस्तिस्त्वाहा॥ वाक्काननस्वस्तिवाक्सीय० न॥ ॐ मम्मनिन
 वम्भ॥ दद्यामिभामस्त्वावाजामृगंनानूवर्माउवावनीथावनूगरेकृत्वाहृय

कृत्वा मूद वामदन्तु ॥ ॐ धनन श्रुमिष काया ॥ श्रुमिष यद ॥ गता श्रुद वागनी ॥ यद
वादि की ॥ ॐ मृग्य दाय ॐ दमासनी नमः ॥ ॐ श्रुद वदाय ॐ दमासनी नमः ॥ ॐ साम
वदाय ॐ दमासनी नमः ॥ ॐ श्रुद वदाय ॐ दमासनी नमः ॥ ॐ श्रुमिमी ॐ य
माहिर्न यरुस्य देव मृत्तु ॥ हाता वन ल धातमी ॥ ॐ ॐ धन ॐ वा वायवस्तु देव
वः स विना ॥ यार्थ यरु ॥ धातु माय कर्म ॥ श्रायाय धम ध्या ॐ दाय तागी ॥ य
ॐ यका दि वि वृक्षानि पृथि वी यका विष्ठा ॥ अथ धी वा ना वि वः ॥ वे ॥ मान न सह सा वृक्षानि सना दि वा स

निष्ठा स्यात्तु नर्क ॥ श्रुमिष धन ॥ ॐ

जायती नम मिवा श्रुय द्वा मा वस्तु न ॐ स त माय स ॐ सा धु वा श्रुमि ॥ गायनी स्या गव क
य रुमान स्य यृष्ट्या हि ॥ द दि ग श्रुद वागनी ॥ ॐ श्रुमे श्राया हि वी गथ गृहानो रु व जा
गय ॥ निहा गत स्य व हि वि ॥ य धिय म श्रुद वागनी ॥ ॐ हा ना देवी न रि वृष्य श्राया रु व न
धी त थ ॥ ॐ जान रि ध वस्तु न ॥ उ रु व श्रुद वागनी ॥ ॐ मृग्य दाय श्रुि ल्मा गाय मा म द
व गा य ग म य जी कृ द स नमः ॥ ॐ श्रुद वदाय जान दा ज ॥ गाय व द्वा देव गा गृष्टु

च सनमः॥ॐ सामवदायकाऽथ यत्नयन्तु देवताय ऊगनीकृन्ध सनमः॥ॐ
 अथर्ववदाय वेदान्तस्य गाय ॐ नुद वताय अन्तः सुन्द सनमः॥ॐ ॐ नुदाय
 वक्रहस्ताय सनाद्वियन सनमः॥ॐ अ गन्हाकिहस्ताय न जोद्वियन सनमः॥
 ॐ अमायदलुहस्ताय यनाद्वियन सनमः॥ॐ मे मृत्याय खड्गहस्ताय नाद्वि
 यन सनमः॥ॐ वरुणाय मकरासनाय ऊताद्वियन सनमः॥ॐ वायव ध्वजहस्ता
 महिषासनाय हस्ताय १
 पृ २

यमृगवाहनाय पवनाद्वियन सनमः॥ॐ कृवनाय गदाहस्ताय अष्टवह
 नाय धनाद्वियन सनमः॥ॐ श्रीगणनाय शिखरहस्ताय वृषेणसनाय सर्वह
 नाद्वियन सनमः॥ॐ विष्णवे वक्रहस्ताय कृमासनाय पातालाद्वियन सनमः
 ॥ॐ ब्रह्माय कमण्डलुहस्ताय हंसवाहनाय स्वर्गाद्वियन सनमः॥ॐ स्वर्गा
 यनमः॥ॐ म ल्यायनमः॥ॐ पातालायनमः॥ॐ यूननीव ॥ दसमो धर्मा ॥ ५

[illegible][illegible]

संयुक्तं कृतं हयमृत्तुं यायश्मनीं वीक्ष्य किं स हि मायसी गायस नैस्य निः
वायं ४ ०० दमासनी नमः ॥ यूयं नमः ॥ ४ ॥ ततो द्यावा च नी ॥ तत्वा यामि वक्ष्ये जगत्
दमानस्तदा ॥ सुसुजमाना रु विरि ॥ अहं दमाना वरु ॥ अहं वीधुवृषा ॥ समान
श्रुयु ४ यभाषी ॥ ४ ॥ उं द वस्य त्वाम विरु ४ यमेव ध्विना वीरु र्या ॥ यूष्मो रु स्मो र्या
॥ उं गजनी त्वा गजय नि ४ रु वाम रु यिया जं त्वा यिय य नि ४ रु वाम रु निधाना

त्वा नि धिय नि ४ रु वाम रु वसामम श्रु मजा निरु धमा त्वमजा सि ग र्क
धम ॥ ४ ॥ उं वृहस्य ते अति अत थ्या श्रु द्य मयूरा नि कुरु मरु नै यू ॥ यद्वा
दयं कुरु वस मृगय जात तद स्मा सुद वि नै ४ ध हि चि ४ ॥ उं वत्वा नि गृ ज्ञा य
या श्रु स्य पादा द्वा ४ वस फ रु स्मा सा श्रु स्य रि धा वक्षा वृषरा नाव वी नि मरु
द वाम र्या ४ उं आ वि व ४ ॥ ४ ॥ द्यावा द वी न नृ ॥ स्य वि लब्ध वृता द ध न्क श्रु

या ल पूजा ॥ ॥ अथ नवग्रह पूजा ॥ ॐ आ हू ॥ १० ॥ ॐ नित नव ग्रह पूजा
॥ ॥ अथ सावित्री लोकाया ल पूजा ॥ ॐ सा ता न मि न्द्र ॥ १० ॥ ॐ नी ला दि द
हा ला क या ल पूजा ॥ ॥ अथ यै व व क पूजा ॥ ॐ स था जा भा ॥ ॐ ॥ ॐ ति य
व व क पूजा ॥ ॥ अथ मा स य का दि पूजा ॥ ॐ अ र्द्ध मा सा ॥ ॐ अ र्द्ध न ४ य क
ति ॥ ॐ ॐ ला र्णा ४ य क ति ॥ ॐ न क र्ण य ४ स्वा हा ॥ ॐ या र्णा या र्णा ॥ ॐ का र्णा

सि ण्ठ न्द्र ॥ ॐ सूर्य पु या पू ज न्द्र ॥ ॐ आ था य वा स ॐ न ह ॥ ॐ अ र्क क र्म
क र्म ॥ ॐ अ र्ध सूर्य ना र्णा ॥ ॐ अ न व स्र अ ना व र्ध ॥ ॐ ना ४ स वि रु व न
य र्णा ॥ ॐ स न्द्र त्ता ना सि ॥ ॐ ॥ ॥ अथ सूर्या दि पूजा ॥ ॐ आ हू ॥ १० ॥
ॐ ति सूर्या दि पूजा ॥ ॥ ॐ स्र कि न ॐ ला ॥ ॐ य य ४ य थि यी ॥ ॐ विष्णु न
रा ट म सि ॥ ॐ अग्नि र्द व वा ॥ ॐ श्री ४ न्द्र कि ॥ ॥ धू य ॥ ॐ धू न सि ॥ दी य ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमः ॥ २

॥ म्या ॥ इत्येव विष्णुसूक्तस्य वस्मिन् ॥ १ ॥ यविश्वं कुर्वन् ॥ ॐ विष्णु नवाष्टमसि ॥ यवि
नवध्वनी ॥ अथ पाठं निधाय ॥ ॐ यत्तुष्टु ० नक्षत्रि ॥ यादृगीयतापदी ॥ ॐ श्रीगणेश
मासिनिमार्कनी ॥ ॐ श्रीदिशुनि ॥ श्रीनिवायू ॥ ॐ ॥ ॐ दधीनायाश्रयमुवाश्रुः
ययुवाः ॥ ॐ ममयय ॥ नयना ॥ ययुयति ॥ सुधाशुययति ॥ दवयुर्वी ॥ ॐ
यादृगीयतापदी ॥ ॐ यत्तुष्टु ॥ यादृगीयतापदी ॥ ययुयति ॥ मवृणीध्वीवृत्त ॥ ॐ यादृगीयतापदी

४११

[illegible]

उदवस्था १ वा २

दवावः सविता हि न व्यपासिः प्रकृष्टं त्वत्किं देवता तना च हवः (जायन्तां च) चामहो नो क

पामि ॥

ॐ महीनां पथासि वज्राया इ. अस्मि वज्रो मे दहि। वृक्षस्य सि कनी न कश्चि
दो अस्मि वज्रो मे दहि ॥ अथ कृत्यं मोक्षं निधाय ॥ ॥ गतं च नू विधानं च
॥ ॐ धन्यमसि धि नू हि दं दानं या ज्ञायत्वा दानाय त्वा चो दीर्घा मनूय सि नि
मायूष धानु ॥ गच्छत नि नि कनी ॥ ॐ अग्ने रुद्र नू न सि वाधा विमर्क नै दं ववी
नयेत्वा गृह्णामि ॥ उरु खल गच्छत नि धाय ॥ ॐ वृहद्वा सि वान स्य ल्यः स
गच्छत ग्रह नै ॥ ॐ अदि सेना त्वा सि वि श्र वं ध्या त्स्वर्गं ता दधु न ता व स माय स्या मि ॥ २

सि मध्य यजय च सविता चामहो नो क

दं दं वया रु वि ॥ मृगं न मादाय ॥ ॐ समी अमृ समी च ॥ रु वि दं द हि रु
वि दं द हि ॥ मृगं न ॥ उरु खल स्या य ॥ ॐ कृ कृ हो सि म धृ जि क ॥ ॐ ममू य वि द
वया वय ॥ सी द्या त ॥ सी द्या र् ॥ कू टनी ॥ ॐ ऊ ऋ व व वृ ह म सि य मि त्वा व र्ष वृ द्ध वृ
॥ ॥ गच्छतं हृ य नि धाय ॥ ॐ वनो यू ग ॥ वन द ॥ यना यू ग ॥ अना ग य ॥ ॐ वना त न ॥ ॐ
अय रु ग ॥ वन द ॥ वन द ॥ वि वि न रु ॥ स्वा त्वा नि धाय ॥ ॐ दं द वा द ॥ स वि ता हि न व्य पा सि ॥

वि ॥ ॥

मा ५

यमिगृह्णोस्व किं नया विना ॥ तनुतायुः कवी ॥ ॐ दयस्य ४ सू अर्ध ॥ किंचित् ननु
 लक्ष्मि यन् ॥ नायश्रासं दीतगुणं तनुने निधाय ॥ वन्दनादियूजय ॥ ॐ एगमेमोय
 नमः ॥ ॐ रुद्राजाय नमः ॥ ॐ विष्णुमित्रे नमः ॥ ॐ उमद मनने नमः ॥ ॐ वसिष्ठाय न
 ॐ काष्ठ्याय नमः ॥ ॐ शूराय नमः ॥ ॐ बुद्धाय नमः ॥ ॐ विश्वदेवे नमः ॥ ॐ महेश्वरा
 नमः ॥ ॐ प्रजापते नमः ॥ ॐ नान्या विष्णुया विना विना वरुव ॥ यत्कामास्तु रुद्रा

[illegible]

॥यनिश्रुति कननी॥ॐ दं वस्यत्वमि॥श्रुत्युक्तं॥ॐ ज्ञातामिह मविगात्रमिन्दु ७ रुक्म
 वं।मरुवचधूनमिन्दु।कंयामिहार्कंयुवकृतमिन्दु ७ स्वस्तिनामद्यवाधाविन्दु ४॥ध्रुवद
 विंयुगायनं॥॥ॐ ॐ धत्वमि॥ध्रुवं नश्राश्रावनाउनी॥दविनास्रुमावाउनी॥ॐ
 सविहस्त्रायधव॥कृष्णयूग्मने॥श्राश्रयैवतं॥मृत्युवतं॥संयवनध॥ॐ सविहस्त्र
 ॥ॐ॥॥श्रात्माश्रुक्तं॥ॐ नश्रासिधुकत्यादि॥अजमाननश्राश्रयैवतं॥॥

।नीयामास्योत्वाहर्षेयकासि॥३

यविशक्तनरिह॥श्राश्रुक्तंमरुवतं॥यादवासीस्कार्नेयुर्वव॥ॐ यविशक्त
 मि॥उदकनायुवनी॥ॐ दवीनायोने॥उयाद्वनी॥ॐ ययानॐ ॐ ॐ निद्रदिगण
 ययी॥ॐ श्रुमंयत्वायुष्ट्यामा॥श्रुमियाद्वनी॥ॐ कृष्णास्याखनेष्ट्याग्मयत्वाह
 र्ष्ट्यादामि॥वदिनसिवरिष्टत्वाहर्ष्ट्यादामि॥वदिनसिष्टग्यष्ट्याहर्ष्ट्यादामि
 मि॥सर्वथाद्वनी॥ॐ यथाहदव॥श्रुमिकलुषियदक्षिणीकृत्या॥ॐ श्रुदित्येषु

[illegible][illegible]

(ॐ) गङ्गा नूयामहि स्वाहा ॥ (ॐ) वृन्नाय स्वाहा ॥ (ॐ) स्वस्ति यन्नाम नूयामस्य
 यन्नामसा ॐ वायुनदं धना नूना जानता सं ॐ मम हि ॐ ॥ (ॐ) सिमकानयनाय
 स्वाहा ॥ (ॐ) माहिर्मायुना कर्ममस्त्रातानानर्वायुहि ॥ घृणस्य कुल्या उपसु
 गस्य यथा ॐ नू स्वाहा ॥ (ॐ) ज्ञानकर्मस्त्राहा ॥ (ॐ) काय स्वाहा ॥ कर्मस्त्रा
 स्वाहा ॥ धीमाधीनाय स्वाहा ॥ मनूय जायगय स्वाहा ॥ विरु विरुणाया ॥

वसो स्वाहा

दिव्ये स्वाहा दिव्ये मन्त्रे स्वाहा ॥ दिव्ये समुद्री काये स्वाहा ॥ सत्रस्त्रे स्वाहा
 सत्रस्त्रे पावकाये स्वाहा ॥ सत्रस्त्रे वृद्धे स्वाहा ॥ पूष्णे स्वाहा ॥ पूष्णे पुष्य
 धुये स्वाहा ॥ पूष्णे नवधिये स्वाहा ॥ त्वष्ट्रे स्वाहा ॥ त्वष्ट्रे स्वाहा ॥ त्वष्ट्रे
 विष्णवे स्वाहा ॥ त्वष्ट्रे पुत्रपाय स्वाहा ॥ विष्णवे स्वाहा ॥ विष्णवे निरुपाय स्वा
 हा ॥ विष्णवे सिधिविष्णवे स्वाहा ॥ सत्रस्त्रे कनासाय स्वाहा ॥ (ॐ) स्वमन्त्रे शुभे

^{य ३} स्वमासुसूक्ष्मी लमं ह्य लमं भनस्य विस्व व न स्य सुमा म धी स्य ४ स्व नृभः
 नृपगं जाय सं शु चिं ॥ ॐ निष्क म नाय स्वाहा ॥ ॐ यज्ञा यज्ञा वा अग्ने य गिया
 नि वाय दक्ष साय पवमं मृगं जाय दसं यियं भिगं न स ॐ सिषां ॥ अग्ने व नाम
 करं जय स्वाहा ॥ ॐ या जय स्वाहा इषा नाय स्वाहा या नाय स्वाहा विंदु म स्वा
 हा ॥ अग्ने य स्वाहा ॥ वा य स्वाहा मनस स्वाहा ॥ हल या ग नाय स्वाहा ॥ ॐ

^{म १} या ४ रु लि नी यो हं लां पृ ^{अ १} ध्या यं य पृ षि नी ४ ॥ वृ रु स्य गि पृ सु गा स्ता ना म ॐ
 ल ॐ रु स ४ ॥ अ न या ग नाय स्वाहा ॥ ॐ अ न य न न स्य ना द अ न मि वे स्य शु षि
 ४ ॥ य य दा ना व ना वि ष उ ॐ ना धे रि दि य द ॥ व ४ ॥ यूर्व व दा य म नी ॐ इ य
 दा दि वे म् ४ ॥ ने सि न स्ता ना म ता दि वा यूर्ग य वि न न्ना य मा य ४ शु न्ध न्ध मे न स ४ ॥ ॐ
 वृ ४ ॥ क न य स्वाहा ॥ ॐ मृ द्वा न दि वा अ न रि यृ धि या वे ष्वा न न मृ ग अ ज ग मा गि

म २ ७ २

क्लिप्तं विलेप्य मुमुक्षुः सक्तं नृतिर्योगमहिदवाहिनी मदायुः स्यात् ॥ २ ॥
 कविः समाजमतिथिः जनानामासनायानीजनयनकंदवा ॥ ३ ॥ कर्तुं रुदायत्वा
 हा ॥ ३ ॥ रुईकः पुरिः ॥ ४ ॥ यामंदवा रुईयः ॥ ५ ॥ मादरिः यः ॥ ६ ॥ वतवः ॥ ७ ॥
 यत्वा हा ॥ ८ ॥ वतं कः ॥ ९ ॥ वतं कः ॥ १० ॥ तानिर्वन्नाग्निः ॥ ११ ॥ वनस्यतिः ॥ १२ ॥
 यः ॥ १३ ॥ मनामः ॥ १४ ॥ मृगीकामरिः ॥ १५ ॥ वः ॥ १६ ॥ वः ॥ १७ ॥ वः ॥ १८ ॥
 जीवदा मायत्वा हा ॥ १९ ॥ वतं नदीकामायातिदीकयायातिदक्षिणीदक्षिणीय

७३

८५४

द्वामायातिद्यदयामयमायन ॥ २० ॥ भवतामावनायत्वा हा ॥ २१ ॥ उरुमीववृणः
 याः ॥ २२ ॥ मः ॥ २३ ॥ वः ॥ २४ ॥ धर्मविमध्यमः ॥ २५ ॥ मः ॥ २६ ॥ मः ॥ २७ ॥
 यः ॥ २८ ॥ मः ॥ २९ ॥ मः ॥ ३० ॥ मः ॥ ३१ ॥ मः ॥ ३२ ॥ मः ॥ ३३ ॥ मः ॥ ३४ ॥
 मृगीमः ॥ ३५ ॥ मः ॥ ३६ ॥ मः ॥ ३७ ॥ मः ॥ ३८ ॥ मः ॥ ३९ ॥ मः ॥ ४० ॥
 विवाहायत्वा हा ॥ ४१ ॥ मः ॥ ४२ ॥ मः ॥ ४३ ॥ मः ॥ ४४ ॥ मः ॥ ४५ ॥ मः ॥ ४६ ॥

ॐ शम्भुर्देवजसहस्रगुणैर्विभक्तः। उवाच कस्मिन् वदन्तः। उवाच कस्मिन् वदन्तः। उवाच कस्मिन् वदन्तः।
 गृहानामुक्तं गम्यतां कुरुमीयं यत्तु श्रुतिना वनं दिवस्वाहा॥ ॥ ॐ उवाच ॥ ॐ उवाच ॥
 हा॥ ॐ शम्भुर्देवजसहस्रगुणैर्विभक्तः। उवाच कस्मिन् वदन्तः। उवाच कस्मिन् वदन्तः। उवाच कस्मिन् वदन्तः।
 यमामुगा॥ ॐ मानुषिणं विमर्शनाय स्वाहा॥ ॐ मानवयुग्मं यन्माम्नि ९ श्वथानां
 वरावृषाणां विष्टेर्देवैर्मृदुलिङ्गं विदामः ४ युजाय निविष्टे कर्मविमर्शनाय स्वाहा॥
 हा॥ ॥ ॐ सैमूखीकननाय स्वाहा॥ ॐ उवाच हृदयं दिवस्वाहा ४ युवाह जान
 मिमं ३

४ सवृगैर्होतृसंघवजातः ४ स ऊनिहानं ४ यथा ऊनामिष्टं निर्वृतामूर्खं स्वाहा॥ ॥
 ॐ उवाच ॥ ॐ उवाच ॥ ॐ विष्टं तस्य हृत् नृत् विष्टं तामूर्खा विष्टं तामूर्खा वा हृत् नृत् विष्टं
 तस्या ३। सै वाहृत् यमति संयतं ३ यो वाहृत् मिज नयं ददन्तः ॥ ॐ उवाच ॥
 ये स्वाहा॥ ॐ मनाः ३। निर्वृतामायस्य वृहस्य निर्वृत्तमिर्मतना खनिर्वृत्तमि
 मं दधातु विष्टं दधातु सूरुहमा दयनामा ३। यनिष्टं स्वाहा॥ ॥ ॥ ध्यानीय १००

ॐ समिधाग्निर्वत्यनघृतेर्वाधयमानिथिग्निर्हिह द्याहहानन ॥ ५४

[illegible][illegible]

षष्ठासि यवती य नित्वा दित्या त्वग्बुद्धि वस्तु कृती न सिधिवत्ता सिध्या वतं यीय
 नित्वा यवती वत् ॥ तिस्रं वीथ्यं कृष्णं न वत्ति सिवान् नमू द्विष्य ॥ ॥ ॐ श्रीग्नवा
 ऊजि द्वा ऊज्वा स निष्यं गं वा ऊजि न ० सी मा यि ॥ उय य मन मूल ना त्म य ऊर्ज ॥ ॥
 ॐ ॐ ॐ दस्य वज्जा सि वा ऊसा त्वयार्थ वा ऊ ० म ॥ वा ऊ स्य नू य स वं मा तर्ज मही म दिति
 नाम वचसा कला मिह ॥ यस्या मिदं विष्णु वन मा विवहा न स्यान्ना द वं स वि ता ध म्यसा

विष ॥ वाम रुक्म वं वृथ ॥ तस्मिं यूज य ॥ ॐ ॐ द्वा य न म ॥ ॐ व रु रु स्ना य न
 न म ॥ ॐ सुना धिय न थ न म ॥ ॐ ज ना व मि नु म वि ना न मि नु ० रु व रु व सु रु
 व ० शु ले मि दं ॥ द्रया मि ग कृ प व रु न मि नु ० स मि ना म य वा धा मि नु ॥
 गग ॥ युज्जा प मि द व ग म न स वि न्या ॥ व क्सा य जी न व द लो क या ला व र्ज ॥ पुन
 र्द मि वृ द वा र्ज ॥ कृ णु ॥ श पी ग वृ ० न म ० लं का ले थ ॥ ॐ शि र्प या य न म

॥ यत्तु यो य नमः ॥ ॐ द्रवा गाय नमः ॥ ॐ दि (८) नमः ॥ ॐ वि दि (८) नमः ॥
 ॐ स ग्ना य नमः ॥ ॐ म ह्यो य नमः ॥ ॐ पा गाला य नमः ॥ ॐ मे यो नमः ॥ ॐ म
 ग्नि नमः ॥ ॐ स्कंदा य नमः ॥ सूर्या य नमः ॥ ॐ या गीष्वा य नमः ॥ ॐ म ह
 या गीष्वा य नमः ॥ ॐ गृह्यो नमः ॥ ॐ द व खान नमः ॥ ॐ आमु विद्या नमः ॥
 ॐ हाम द व गाय नमः ॥ यो नमः ॥ पूजा नमः ॥ पूजा नमः ॥ ॥ सर्वे द व यो ॥ ॥

(३) गीता नामादि
 अथ नमो भगवते ॥ कुम्भक गन ॥ उक्त नमो द व यो ॥ मा ठि ग कु ग गिल
 ल न ॥ द कि (८) स भा पि ग य ॥ अ प स य न ॥ उ प स य न ॥ ॐ ॐ ॐ द वीः
 य म कृ (८) द (८) ध ले आ कृ ॥ अ (८) व र्ण र्ण व द य म व नी र्ण द्रा वा पृ थि
 वि अ र्ण द्रा वा पृ थि वी स वि कृ ॥ द व य ॥ ॐ ॐ ॐ अ कृ न रु वि षा रु स
 हा र्म अ नि षा ज नि स्या हा ॥ ॐ व न य न उ क्त स य न व ॥ ॐ नि द्रा यः

[illegible]

द... ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मयि यानि सुकृता ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

मवेदाय स्वाहा ॥ ॐ दं सामवेदाय ॥ ॐ सुर्याय स्वाहा ॥ ॐ दं सुर्याय ॥ ॐ दिवे
स्वाहा ॥ ॐ दं दिवे ॥ ॐ वकावर्जुने स्वाहा ॥ ॐ दं वकावर्जुने ॥ ॐ देवस्य ॥ स्वा
हा ॥ ॐ दं देवस्य ॥ ॐ मृषिस्य ॥ स्वाहा ॥ ॐ दं मृषिस्य ॥ ॐ योग ॥ ॥ ॐ ध
र्माय स्वाहा ॥ ॐ दं धर्माय ॥ ॐ मेधाय स्वाहा ॥ ॐ दं मेधाय ॥ ॐ यज्ञाय स्वाहा
॥ ॐ दं यज्ञाय ॥ ॐ धान्याय स्वाहा ॥ ॐ दं धान्याय ॥ ॐ सदस्य गये स्वाहा ॥

ॐ दं सदस्यनथ ॥ ॐ अन्नमनथ स्वाहा ॥ ॐ दं अन्नमनथ ॥ त्याग ४ ॥ ३ ॥
ॐ अथर्वदाय स्वाहा ॥ ॐ दं अथर्वदाय ॥ ॐ दिग्य ४ स्वाहा ॥ ॐ दं दिग्य ४ ॥ ॐ
वन्दुसम स्वाहा ॥ ॐ दं वन्दुसम ॥ ॐ कृष्णवर्णाय स्वाहा ॥ ॐ दं कृष्णवर्णाय ॥
ॐ शुद्धाय स्वाहा ॥ ॐ दं शुद्धाय ॥ ॐ मधाय स्वाहा ॥ ॐ दं मधाय ॥ ॐ यज्ञाय
स्वाहा ॥ ॐ दं यज्ञाय ॥ ॐ ध्यानय स्वाहा ॥ ॐ दं ध्यानय ॥ ॐ सदस्यनथ स्वा

हा ॥ ॐ दं सदस्यनथ ॥ ॐ अन्नमनथ स्वाहा ॥ ॐ दं अन्नमनथ ॥ ४ ॥ त्याग
४ ॥ ॥ गतद्विर्वाह ॥ ॐ दं ४ स्वाहा ॥ ॐ दं ४ ॥ ॐ इव ४ स्वाहा ॥ ॐ दं
इव ४ ॥ ॐ दं ४ स्वाहा ॥ ॐ दं ४ ॥ ॐ इव ४ स्वाहा ॥ ॐ दं इव ४ ॥ ॥ ॐ इव
ना अन्नमनथ विद्वान् ॥ द वस्य ४ ॐ अ वया सिमी ४ ॥ अ वि ४ व द्नि नमो
४ ॥ ना वि ४ ॥ ॐ दं मग्नि ४ ॥ ॐ दं मग्नि ४ ॥ त्याग ४ ॥

उ सत्वना अग्निवमा रुवा गान दि व्वा अस्या उषसा द्युष्टो। अथ यद्वा ना वनू व
 ७ न ना व्वा वीहि मुक्ती क ७ सुहवान न धिस्वाहा॥ ॐ दमनि वनू व्वा र्थी त्याग ७॥॥
 ॐ अथा व्वाः गन स्यन रि स सि या ७ सत्व मित्व मया अ सि। अथाना यत्न व हा स्य या
 नाः ध हि रु व ज ७ स्वाहा॥ ॐ दमया व्वाः गन॥ ॐ य न गी न व नू जी य म रु र्थ य स्वा
 हा या ७ वि न ता म य न्ता॥ त हि न्ना अ य स वि न वि षु वि ष्व म् अ व लु म नू न ७ स्व
 हा

२ गाम स्र द वा ध वं वि म ध म ७ अथ य अथ य व य मा द
 को ७ स्वाहा॥ ॐ द व नू व्वा या स वि षु वि ष्व वि ष्व द व त्या म नू ह्य ७ स्व र्क य ७ स्वा
 गमा ॐ उ र रु म द नू व यो न॥ ॐ द व नू व्वा या दि त्या धि य ग य ॥ ॐ नि य अ व नू जी ॥
 ॥ ॐ द व नू व ७ स्व व न्ना र्ग स्वा हा॥ द हा र्थ व रु य वा॥ न ये व व क्का य नी न व द
 ता क या त क ल न अ ७ व क्का मा ग ल य नि द ७ः र ग म सः को मा नीः व हि द्वा नी मा
 दि॥ कृ णि त ना ग य द य द नी धी त क्षी ग ल गु नू आ गि नी स र्वे धृ ता द्वा नि द य
 ॥ ७॥ ७॥ ७॥ ७॥

ग वा मा ग मा ७ अथ य व य मा द

ॐ कामं कामदय धृक् मिशाय वन्द्याय वा ॐ दाया विद्या धृक्
 जायताय ध्यायताय ध्यायताय वन्द्याय वन्द्याय निधाय ॥ ॥ द्युता रुनि वृष्टि ॥
 ॐ सकल अग्नि समिधं सकल जिह्वा ॥ सकल मृषय ॥ सकल धाम प्रिया निमग्न ॥
 सकल ध्यायताय जनी ॥ सकल ध्यायताय नमः ॥ ॥ यत् ॥ ॥ ततस्तितारु
 तिकान्त ॥ ॥ श्रीहृदय गृहि वा अत्युदनी ॥ ॐ द्युता रुनि ॥ ॐ द्युता रुनि ॥

विहिता

मि ॥ द्युता रुनि ॥ ॐ अग्नि मिता सिति मं मार्कन ॥ अजमान नवीहि यावु वीहि ॥
 अवा दनं गितं मिथु यवा मृगं समिधं रुतं पूष्यं वक्र वक्रा दमातिका ॥
 तन्निधाय ॥ ॥ शुक्ला वायु जनी ॥ रुक्मा धव चन्दन यज्ञाय वी तं धृष्ट दीव ॥
 अग्नि आदि ॥ वीहि यावु हृदये न वा ॥ ॐ सवा तं कातरी यूकं कर्कनी मृदिकानि
 वा ॥ अतानि मृदु ता निगुनं यमि गृहणी ॥ यथा यज्ञं वृष्टी सीम मा ॥ यथा यज्ञं

[illegible][illegible]

मोक्षमार्गवशात्

दंवयाविष्मयविधिः॥ ॥यथाहाकि सख्यादुर्गि॥ॐ श्रीसख्याता॥नाम
॥ॐ नार्जुनमध्वनानी॥दहा॥ॐ यकायनन॥यजमाना॥ॐ पुनस्त्रादिया॥
श्रावार्थ॥ॐ वक्रगस्यन॥मितादुमिद्युनमहिगनःदहयाटिःदहावनिदा
नदी॥ॐ नभावसुभय॥समिधमहनसकस्येवाय॥ ॥हानिकादुमि
॥१०८॥ॐ श्रीःहानिका॥नकविदहहानिका॥यथेवीहानिका॥नायहहानिका॥य

धयःहानिकावनस्यनयःहानिकाविःहवदवाहानिकावक्रहानिकासर्वहानिका
हानिकाववहानिकासामाहानिकाविःहानिका॥युष्टिकादुर्गि॥१०८॥ॐ अयः
म्वकीयजामहसुगन्धिःयुष्टिवहनःउवावृकमिववधनामृथामृदीयमामृ
ना॥अयम्वकीयजामहसुगन्धिःयुष्टिवहनःउवावृकमिववधनादितामृ
दीयमामृगह्लाहा॥ ॥गगनायकयूजन॥धनयाथैरमयाथैर॥ ॥

मगावीहि हार्मी॥यवधन्यं गथासुगं कनार्वं माषमवद॥कुरुते कालमावयसि
द्वार्थं मृद्विर्ममिनी॥श्रुवाहि॥यवधन्यता जासमिधया जसपुत्रा उत नदः
दत्तजानीनशाकृत किं यनानिक नवदतीरुत उत धीरुपुत्रा दिदिरुता वि
कदादि नूयक धनयन्त्रक धनसुसुम्भे ॥ध्वनित न कतिरुः धनयुग्यः धियुग्य
उत्तुहचननकी कंमं न्दमूत रुत गामूत यको न इ वादिन गुरु इ ग्य मिमा

रुहामय ॥ ॥ गगावातयदान ॥ उ गगनात्वा ॥ उ श्रुम श्रुमि कं श्रु वा
सिक नमावयमि कं धनं ॥ सप्तस्य ॥ स्वक ४ सु रुदिकी की यीव वा सिनी ॥ उ धुनीव
गगावान ४ यिवत सुसा सुसाया वान ४ यिवती न मिद्रुस्य रु विन सिखाहा ॥ दिहा
४ यु दिहा आदि ४ विदे स उ दिहा दि ग्य ४ खाहा ॥ उ आनी निनि हि न धन ४ सह
प्रीनी नि नूयया हि यल्ल ॥ वाथा श्रुमि सवन माद यत्न सूर्य या रु सति कि ४ सदा

यथा ४ सतिनी

न४॥ ॐ उ रा यिव ग म स्वि नो रान ४ मर्म य च्छु र्ग । अ कि डि या ति नृ मि ति ४॥ ॐ अ र्ध
गान ध्ये वि नृ या ना न र तं दी र्घ वा नि कृ त्वं वा नि क्लृ त् वा नि कृ र्ण वा नि कृ र्ण वा नि
कृ र्ण वा नि कृ र्ण वा नि कृ र्ण वा नि कृ र्ण वा नि कृ र्ण वा नि कृ र्ण वा नि कृ र्ण वा नि
नी कि त व ४ क्री वा अ मृ डा वां न क्लृ त् वा नि कृ र्ण वा नि कृ र्ण वा नि कृ र्ण वा नि
ॐ न भा व ह ४ म य ॥ ॐ अ र्ध र्ण वा गा म ह म नि थ र्ण वा अ धि र्ण वा ॥ न वा ० म ह

मथा रुम वध नानि गुनमसि ॥ ॐ या ये दि ॥ स्वाहा वा ये दि ॥ स्वाहा द कि
ना ये दि ॥ स्वाहा वा ये दि ॥ स्वाहा यनी ये दि ॥ स्वाहा वा ये दि ॥ स्वाहा
दी ये दि ॥ स्वाहा वा ये दि ॥ स्वाहा ॥ ॐ या ये दि ॥ स्वाहा वा ये दि ॥ स्वाहा
ॐ वा ये दि ॥ स्वाहा वा ये दि ॥ स्वाहा ॥ ॐ नि दू जन ॥ ॥ ॐ वा दि द न
॥ सा क या त स वे द व नानि वा या दि द न ॥ ॐ न न्त व द व न न ॥ ॐ नृ न य न न

त्यनादक ऊँ नमी वस्य सुखे ४ ययदागानं नाविषउरू नारधहि द्वि यद वीच
 रुम्यद ॥ ॥ यूजनं देवकर ४॥ दिह स्ताघव नन सिन्दु मलो यवीन यय
 धूयदीय ॥ अरुगभादि ॥ वाक्मज्जामि आवाय्य यूजा अने सैक त्यान ॥ ॥
 अक्षरुन धन वृत्तिका महा धातु त्यादि घृत दीय वृत्तिका हामी ॥ ॥ ॐ मु
 वारं सर्व य १०७ ॥ अक्षरुन धन घृणा इति रुद्र या ७ ॥ ॥ नन ४ याय ४ वि

लहाम ॥ आश्विन ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ उययमन रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा
 ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा
 ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा
 ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा
 ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा
 ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा ॥ ॐ रुद्र ४ स्वाहा

निविकीं श्रुहामि स्वाहा ॥ ॐ श्रुतिविकीं श्रुहामि स्वाहा ॥ ॐ श्रुनाङ्गानं यदाङ्गा
नं नत्सर्वं कियतं मम ॥ सर्वं नद ॥ नो कस्यति विहिनति यथा हिन ४ स्वाहा ॥ ॥
वक्रिमायजीय १०० ॥ ॐ वेदमननाय विद्महे श्रुनन्तार्विनाय धीमहि ॥ न नो
वक्रिंयथादया ७ स्वाहा ॥ ॥ ॐ देवकृतस्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ म
नूयकृतस्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ मित्रकृतस्येन सावयजनमसि स्वा

हा ॥ ॐ आत्मकृतस्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ एनमएनसावयजनम
सि स्वाहा ॥ ॐ अत्रारुमना विद्महे वाक्त्रयवा विद्वानतस्य सर्वस्येन सावयजन
मसि स्वाहा ॥ ॥ ॐ इन्द्रः सनयत्रयुधिष्ठीवमहनं स्वाहा ॥ ॐ रुद्रावायवका
न निद्रायमहनं च स्वाहा ॥ ॐ स्वः सूर्याय दिवमहनं च स्वाहा ॥ ॐ रुद्रुवः स्व
४ चतुमसनः कृत्यः ४ इन्द्रिगः प्रजायतमहनं च स्वाहा ॥ ॐ नृपवर्जुङ्गधायक

मित्रमिदं वनाया गायस्वाहा ॥ ॐ ॐ नृगमयवर्षु जिह्वाग्निवयानायस्वाहा
 ॥ ॐ विश्वं किं कल्कवर्षु यरायाग्निमामदवतव्यानायस्वाहा ॥ ॐ यन्न किं कल्क
 वर्षु द्युतकाग्निर्वीर्यदवतव्यानायस्वाहा ॥ ॐ गमदीनवर्षु सुवायाग्निर्वनू
 दवगसमानायस्वाहा ॥ ॐ श्रुत्यानि श्रुत्यक निर्वृजन् यन् वक्त्र श्रुमृतायिधन
 नायस्वाहा ॥ ॐ यन् यन् यन् ॥ ॐ यन् यन् यन् ॥ ॐ यन् यन् यन् ॥ ॐ यन् यन् यन् ॥
 यन् यन् यन् ॥

यूनर्न ४ याक् ९ रुसंस्वाहा ॥ ॐ सह न जा निवर्तस्वाग्निविन्दस्वधनया विष्टप
 स्वाविष्टतस्य निस्वाहा ॥ ॥ यथा रुति ॥ ॐ स्वस्ति न ॐ देवि ॥ ॐ यय ४ यृ थि
 वीयथा ॥ ॐ विश्वान्नाटमसि ॥ ॐ श्रुग्निद्वता ॥ ॐ यो ४ भानि ॥ ॥ यवध
 यादिवृत्ति के कवर्ति दयो ॥ ॐ उद्ययन् सस्य निस्व ४ यय ४ रुर्न दवर्न दवर्न
 सूर्यमर्गमया निवर्तमी ॥ ॥ वतिहवर्ण ॥ ददिग्न दानं दयादि वाक् नार्क ॥

न प्रयोग

संघवद्युतपाठान्न ॥ ॐ सुमित्रियाश्रयायधयः सतु ॥ ॐ इमित्रियाश्रयायधयः सतु ॥
आत्मनयनातासिधकयविश्वना ॥ ॐ ॐ शान्दवात्रिष ॐ वसनसमसु कृहि। य
यस्मान्नग्नग्नगमर्कमास ॥ ॐ ॐ वज्रसापुजयाधधननय ॥ यविश्वमाचन ॥ व
कलवृक्षयागुंदकिर्णदयाग ॥ यजमानस्यतिष्ठतायकतयकलयायवक्र
सूर्ययागदकिर्णगुह्यमहसंयुदद ॥ १ ॥ ततः संयुक्त इति १०८ ॥ कान्तय

जयेमानस्य अमृकस्ययथाकार्यमपद न संयुक्त इति सुमृहुरुमु ॥ उदवा
मागुविदाग ॥ ॐ वित्वाग ॥ उमिता। मनसस्य तः मंदवयक्त ॥ म्वाहावाग ॥ वा
या ॥ ॐ ॐ आयायस्यसमं गुतविश्वतः तामवृक्षी। रुवावाजस्यसंग ॥ संनयथा
ॐ सिंभूर्यरुवागा ॥ ॐ वृक्षान्यहिमातिषाह ॥ आयायमाना अमृतायभामदिदि
यवा ॥ ॐ ॐ मानीधिय ॥ आयायस्यमदिनमसामविश्वरिन्न ॥ ॐ ॐ रुवान

सयथसुमंसखावृध॥ आनवभामनायभंमत्यनमाचित्तधत्वा॥ अग्निस्त्रीका
 गयागिनाइत्येतां गिरसुमविऽम॥ सुक्तिनय॥ य॥ धका॥ अग्नि कामायज मित्र
 निधिथवृधमसुकाभासुनस्यरुवस्यसमा॥ काविनाउति॥ यय॥ यथिथी यय
 उावधावृयथादिवक्तुनिद्वेयथाधायेयस्वाते॥ अदिना॥ सलुममम॥ देवस्य
 त्वासतिरु॥ अ॥ अग्निनारुवशुननं ऊमवक्तुवच्चसायारिषिभूमिसेनस्येन

देवशुनवाय्यायानायाारिषिभूमिद्वये लिथनवलाय विथेयुवासरि विभु
 मि॥ अ॥ ऊयदादिवमृक्षमि॥ वादि विमृक्षन॥ उद्ययनमसु॥ अ॥ धावृन॥ अ॥
 नमावक्तुनमसु नयनम॥ यथिथेनमउावधीत्य॥ नमावावृनवाचस्यन मा ३
 धानमाविद्ववमरुनकनामि॥ अग्निविद्वस्यभापस्यदेवानीवक्तुनिययी। कनि
 थनं दसामि कनिथ्यामिद्वनन॥ यदवाभादियेकादहासु यथिवमरुधकाद
 नः खिन्नस्नातोमलादिवा॥ दूतंयवित्रेण एवाज्यमायः शुच्यंतुमेनसः॥

वेदिविपज्जिन

सुरैरुवतिनाजाधर्मविजयीरुवतु। यजासुखिनःसमु। दक्षःसुहा
दथासु। अस्मदयजमानस्यसुगणस्यप्रिवनाली। आयनावायःमेऽव
यजजधनतक्षीसंगतिर्सीमानवृद्धिनमु॥ द्वियद्वेदव्यदस्यःसु
रुवतुसर्वसुखाःसुखिनःसमु। यजन्यकालवधीरुवतु। सर्वविधि
यनियुक्तुसमु॥ ॥ जायसाऽमलुतकालय॥ ॥ ॐ सा

अवदास्ययादायश्चयनयदःसामवदाःथरुहै। नकाथवादितीर्थहान
यथवदनंवाहनंवक्रथायी। गयतीयस्यगर्भिनयनसुयनियुक्तुनमः
वर्द्धयुविष्णुसक्तनमूर्तिस्तुवयुतिवदनंयक्तुनृयीवनाहा॥ ॥ नकाथ
क्रानिकृष्णजियथयदगतामिनिदद्यातिमागत्वीरुष्णयतवाविब्रध
यदगतामिनिवर्गसिद्धा। नानृष्णवानवृक्षासुवतीरुवतसाजीनिकात

शुद्धाक्षवदामागासगक्राजयजययदानित्यनूयाहिवागम ॥ अथ यज्ञः
 संहितादिगिविदिगिगिवासीस्तिनादवतायाकः ॥ वक्रिमध्यकलगायनिवृता
 मणुनल्लुसवा। न सर्वमनुदवाश्रिमनवनदामनुसकाखनूयासूडामना
 दिहोनायजनयनिविधीकीणदायादमस्य ॥ ॥ यद्व्याखवनत्वनसनि
 धिगुठिकायाइकाहवनत्वं याना न दिद्यसिद्धिः ॥ उरुवनसहिनादिद्यचिना

मलिभ्यः सिद्धिर्दिद्यावधीनीयनयूनविगनीगनूठं मनुमादीवेनयस्ययमादात्स
 नवठुठवगामनिदवः ॥ यगनः ॥ ॥ ॐ लायाताकयाताः ॥ स्वसदिगिवसिता
 ॥ स्वसमूदाः ॥ स्वयूका आदित्यादियरुभावेसनिरुविसदाऊनदवाः ॥ स्वयूका
 ॥ मन्नायागः ॥ स्वतिथ्यागयुनूयइ कल्लुममार्तुसिद्धिः ॥ अथाददाहुरव
 उवसमनियकू पूरुशुशारु ॥ ॥ यावद्दीवीनरीगवहमिसूननदीजाक

श्री॥ ॥ बुद्धा विष्णुः शंकरः कलनयमवततः ॥ ४ ॥ याणी समीना धीयः क्षण
दुर्गा ग्रह गणवसुकिः ॥ ५ ॥ युतां सर्वनागाः ॥ ६ ॥ नमो ॥ सिद्धि वीना इति न रुयुहना
॥ ७ ॥ चन्द्रसूर्यादि दवागिन्ध्यायास्यमाना ॥ ८ ॥ सुनवगनमिना ॥ ९ ॥ या उव ॥ सर्वदेवाः ॥
॥ १० ॥ कोन वृक्षमूलकयदक धिने चन्द्रविक्रीर्षु सार्वसृष्ट्यर्षु सानयूष्ये च
नधिनरु र्गंधधर्ववरुर्न ॥ ११ ॥ जागृतायास्तृणां रुमनकचयदे निरयनयस्य

निर्णयामस्तु कल्युद्धः शुचिगणमनिरिः यादुवाधदवृद्धः ॥ ॥ कृतार्थ
नामसिंहं शुक्रटितनमूर्खं न कनकाधनाल्लेन जातिः यादुवर्तकृतवहसद्वर्ण
इन्निनिद्वन्द्वनदु निरिन्नायद्वगार्धमथगजगदिर्नदानवद्वहि नव्यमा
यं यादुस्वयं वेयतिरुवनमहासिंहवृथ न विष्णु ॥ ॥ यी० यस्याधविशीज
तधनकवर्णलिङ्गमाकाशं त्र्यम्बकं नन्दं वृष्यामालाग

रुगणकसूक्तं नरचन्द्राकारवक्रिः शुक्रकोसुयस
मुद्रातुजगिनिस्त्रिखनासकपागलयाद्योर्वदच
न्यात्रिवाच्यदगदिगावहनैपातुवादिबलिङ्गः ॥ ॥
दवाभूतदृषीनां युगमपिचयनेयनैवेः कुरु
मूर्ति (गमस्त्रिभुलीर्थमेशः कसूमरुलसुर्गादिः)

ॐ वषावादित्रनेदीये ४ च्छुगाङ्गादीमलयगलेनमि
द्विष्टमिद्वनद्ववापुष्टीनेवद्यष्टी ४ स्यकुत्रउविष्टि
नन्नमयुष्टकुम्भी ॥ उवद्वगानमः ॥ दूर्वनष्टलास
स्यामीनिखिलजनगुत्रुसर्वगान्दुपवकानानुष्टन्या
लेकुलारिवकलुषरुताथेववद्वगुष्ट्यायी। विद्वनकः

कृतेनयत्रमनिजगुत्रुर्मन्त्रवदाङ्गमूर्तिर्यज्ञानमादि
दथावलचयनचउत्रमुक्तमनमाम् ॥ ॥ सुगुणया ॥ ॐ
श्रद्धावतिआगा ॥ गङ्गाया ॥ ॐ विश्वध्वनायवीनाय ॥ वतिया ॥ ॐ त्रिया
नन्दः यवैश्वर्य ॥ गङ्गाया ॥ ॐ नमस्तु कथितद्वी ॥ कीमानीवाया ॥ ॐ की
मानीमयुनावृष्टा ॥ धवया ॥ ॐ ॐ द्दवनमाम् ॥ सदासदाजीया ॥ सदा

जीयन्तनागदद्यात्तद्वीगलदवतास्त्वनानाधियनमस्तु शास्त्रावेष्टानतन्त्र
म॥ ॥ॐ संन सत्तु निर्लगतैस्तुतिर्मा विधुक्तयायादयानाजान४ यनिः
यानयत्तुवस्रधाधर्मस्तिनासर्वदा। काससंतिवर्षिजलमृच४ सेतुयजा
युष्मदाभादनी घनवृद्धिवाच्यवसूह० ॥ॐ श्रीयुभादासदा॥ ॥ॐ जिह्वाः
दाया० यवनचनाना० ॥ॐ श्रुमानादिन्यागा० स्याद्युद्धंतिखनयतिर्नृकयय

द्वन्त्रु। मागहीनयदिक्रयतिर्नयधमानयिनर्वमनत्सर्वतदयिचमयास्त्वाग
मनत्कमध्व॥ ॥ॐ श्रुमाना० क्लानभावायिजन्मयाभाहिर्न कृर्न। दन्त्रुम
हसिदवंगदमायुमरुनीयसा॥ ॥ॐ मन्त्रुसर्वजगतीयनहितकृत्तुर्गं रुतग
गा। दायाययानुशास्त्रि सर्वरुस्त्रिरुवतुसाका४ त्वंगति४ सर्वयतानी सैस्त्रि
नत्वंचनाना० श्रुक्तश्चनाना० दृष्ट्वात्वं यत्रमष्टव४॥ कर्मणमनसावाचा

त्वनानाम्यागतिर्ममामनुहीनं किं याहीनं रु किं हीनं नरथेवच ॥ ऊ य हा मा च
 नाहीनं कृ नं नित्यं मया न व ॥ अ कृ नं वा क हीनं न न्यूनं द्रु मा स न ॥ ॐ अ थ वा
 न ॥ ॥ अ ज मान स्य अ थ का र्य मू य द षा य कृ सं पू र्ण नि मि त्य र्थं अ गु ग न्ध
 दि ॥ ॥ म गु त क्क य य न ह्म ष णं अ ज मान ॥ द व क्क पु त्तानि क त ष म षा र्वा द
 ॥ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥ २०१ ॥ २०२ ॥ २०३ ॥ २०४ ॥ २०५ ॥ २०६ ॥ २०७ ॥ २०८ ॥ २०९ ॥ २१० ॥ २११ ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ २१४ ॥ २१५ ॥ २१६ ॥ २१७ ॥ २१८ ॥ २१९ ॥ २२० ॥ २२१ ॥ २२२ ॥ २२३ ॥ २२४ ॥ २२५ ॥ २२६ ॥ २२७ ॥ २२८ ॥ २२९ ॥ २३० ॥ २३१ ॥ २३२ ॥ २३३ ॥ २३४ ॥ २३५ ॥ २३६ ॥ २३७ ॥ २३८ ॥ २३९ ॥ २४० ॥ २४१ ॥ २४२ ॥ २४३ ॥ २४४ ॥ २४५ ॥ २४६ ॥ २४७ ॥ २४८ ॥ २४९ ॥ २५० ॥ २५१ ॥ २५२ ॥ २५३ ॥ २५४ ॥ २५५ ॥ २५६ ॥ २५७ ॥ २५८ ॥ २५९ ॥ २६० ॥ २६१ ॥ २६२ ॥ २६३ ॥ २६४ ॥ २६५ ॥ २६६ ॥ २६७ ॥ २६८ ॥ २६९ ॥ २७० ॥ २७१ ॥ २७२ ॥ २७३ ॥ २७४ ॥ २७५ ॥ २७६ ॥ २७७ ॥ २७८ ॥ २७९ ॥ २८० ॥ २८१ ॥ २८२ ॥ २८३ ॥ २८४ ॥ २८५ ॥ २८६ ॥ २८७ ॥ २८८ ॥ २८९ ॥ २९० ॥ २९१ ॥ २९२ ॥ २९३ ॥ २९४ ॥ २९५ ॥ २९६ ॥ २९७ ॥ २९८ ॥ २९९ ॥ ३०० ॥ ३०१ ॥ ३०२ ॥ ३०३ ॥ ३०४ ॥ ३०५ ॥ ३०६ ॥ ३०७ ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥ ३११ ॥ ३१२ ॥ ३१३ ॥ ३१४ ॥ ३१५ ॥ ३१६ ॥ ३१७ ॥ ३१८ ॥ ३१९ ॥ ३२० ॥ ३२१ ॥ ३२२ ॥ ३२३ ॥ ३२४ ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥ ३२७ ॥ ३२८ ॥ ३२९ ॥ ३३० ॥ ३३१ ॥ ३३२ ॥ ३३३ ॥ ३३४ ॥ ३३५ ॥ ३३६ ॥ ३३७ ॥ ३३८ ॥ ३३९ ॥ ३४० ॥ ३४१ ॥ ३४२ ॥ ३४३ ॥ ३४४ ॥ ३४५ ॥ ३४६ ॥ ३४७ ॥ ३४८ ॥ ३४९ ॥ ३५० ॥ ३५१ ॥ ३५२ ॥ ३५३ ॥ ३५४ ॥ ३५५ ॥ ३५६ ॥ ३५७ ॥ ३५८ ॥ ३५९ ॥ ३६० ॥ ३६१ ॥ ३६२ ॥ ३६३ ॥ ३६४ ॥ ३६५ ॥ ३६६ ॥ ३६७ ॥ ३६८ ॥ ३६९ ॥ ३७० ॥ ३७१ ॥ ३७२ ॥ ३७३ ॥ ३७४ ॥ ३७५ ॥ ३७६ ॥ ३७७ ॥ ३७८ ॥ ३७९ ॥ ३८० ॥ ३८१ ॥ ३८२ ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ ३८५ ॥ ३८६ ॥ ३८७ ॥ ३८८ ॥ ३८९ ॥ ३९० ॥ ३९१ ॥ ३९२ ॥ ३९३ ॥ ३९४ ॥ ३९५ ॥ ३९६ ॥ ३९७ ॥ ३९८ ॥ ३९९ ॥ ४०० ॥ ४०१ ॥ ४०२ ॥ ४०३ ॥ ४०४ ॥ ४०५ ॥ ४०६ ॥ ४०७ ॥ ४०८ ॥ ४०९ ॥ ४१० ॥ ४११ ॥ ४१२ ॥ ४१३ ॥ ४१४ ॥ ४१५ ॥ ४१६ ॥ ४१७ ॥ ४१८ ॥ ४

[illegible]

महं। उयययनुमनूत४सुगान००नु याष्टुहवासवा॥ वक्राविसकन॥ ॥३॥
०००विम॥ यणाविम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥
०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥
०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥
०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥
०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥
०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥
०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥

जागवदसंख

यनसमिधहामि॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥
तलसमिध०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥
भ०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥ क०००विम०००॥ ॥३॥
महहिमविनाशदधरुमधमदवीसनसनिश्रदधरुमधमधिविनाशदवा
वाधलायुक्तवसजाविलीगानिवमश्रायानीवाक्यागवदसंख०००॥ ॥३॥

ली॥ ॐ श्रायू र्ध्वजमदग्नि ४ कठययस्य श्रायू र्ध्व॥ यदवश्रायू र्ध्वं ननाश्रुतु श्रायू
 र्ध्व॥ ॐ गुरु रुध्मनातताठ ग्रावार्यादक्षिण वारु मूत दृदि नितर्क कात्रय ७ ॥
 कतश्रदि विसर्जन ॥ ॐ उदयनमख ॥ ॥ यम कतश्र विसर्जन ॥ ॥ यम
 सिंहासनाक वस्त्र सिंहासनन निर्मल ॥ कतश्र रिषक ॥ वन्दनादि श्राद्धादी
 द ॥ यजमानयनिष्ठादय्यवनाहर्न ॥ गयवत्यादि स्वस्वकासनय ७ ॥ ॥

[illegible]

आरुन॥१॥ॐ स्वाविद्यस्य नाजनिहानिंरुद्वि यदहं न दृश्यते ॥२॥ ॐ नमिउ३सं वनू ७४सं
 नारुवत्तय्यमा॥४॥ॐ स्वावृहस्यनि४॥ॐ नमिउ३सं वनू ७४सं
 ३सूर्यशसन४कनिकदद्वंयदृन्नाश्रुवत्तय्यमा॥१०॥ ॐ नमिउ३सं वनू ७४सं
 नारुवत्तय्यमा॥४॥ॐ स्वावृहस्यनि४॥ॐ नमिउ३सं वनू ७४सं
 ३सूर्यशसन४कनिकदद्वंयदृन्नाश्रुवत्तय्यमा॥१०॥ ॐ नमिउ३सं वनू ७४सं
 नारुवत्तय्यमा॥४॥ॐ स्वावृहस्यनि४॥ॐ नमिउ३सं वनू ७४सं

[illegible]

